त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च।
आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः।।३३।।
मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः संबन्धिनस्तथा।
एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन।।३४।।
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते।
निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन।।३५।।

किम्=क्या (प्रयोजन है); **नः**=हमें; **राज्येन**=राज्य से; **गोविन्द**= हे गोविन्द; **किम्**=क्या; **भोगैः**=भोगों से; **जीवितेन**=जीवन से; **वा**=अथवा; **येषाम्-अर्थे**=जिन के लिए; **कांक्षितम्**=इच्छित हैं; **नः**=हमें; **राज्यम्**=राज्य; **भोगाः**=विषय; **सुखानि**=समस्त सुख; **च**=तथा; **ते**=वे ही; **इमे**=यह सब; **अवस्थिताः**=स्थित हैं; **युद्धे**=युद्ध में; **प्राणान्**=जीवन; **त्यक्त्वा**=त्याग कर; **धनानि**=वैभव को; **च**=तथा; **आचार्याः**=आचार्य; **पितरः**=पितृ-तुल्य; **पुत्राः**=पुत्र; **तथा**=और; **एव**=निश्चय ही; **च**=तथा; **पितामहाः**=पितामह; **मातुलाः**=मामा; **श्वशुराः**=ससुर; **पौत्राः**=पौत्र; **श्यालाः**=साले; **सम्बन्धिनः**=सम्बन्धी; **तथा**=तथा; **एतान्**=इन्हें; **न**=नहीं; **हन्तुम्**=मारना; **इच्छामि**=चाहता; **घ्नतः**=मारने पर; **अपि**=भी; **मधुसूदन**=हे कृष्ण; **अपि**=भी; **त्रैलोक्य**=त्रिभुवन के; **राज्यस्य हेतोः**=राज्य के लिए; **किम् नु**=कहना ही क्या है; **मही-कृते**=पृथ्वी के लिए तो; **निहत्य**=मारकर; **धार्तराष्ट्रान्**=धृतराष्ट्र के पुत्रों को; **नः**=हमें; **का**=क्या; **प्रीतिः**=प्रसन्नता; **स्यात्**=होगी; **जनार्दन**=हे सब जीवों का पालन करने वाले श्रीकृष्ण।

अनुवाद

हे गोविन्द! हमें राज्य, सुख अथवा जीवन से भी क्या प्रयोजन है, क्योंकि जिनके लिए हमें इन पदार्थों की इच्छा है, वे ही इस युद्ध में खड़े हैं। हे मधुसूदन! गुरुजन, पितृजन, पुत्र, पितामह, मामा, श्वशुर, पौत्र, साले तथा अन्य सम्बन्धी भी धन तथा जीवन की आशा को त्याग कर युद्ध में मेरे सामने खड़े हैं। अपनी प्राणरक्षा के लिए भी इनके वध की इच्छा मैं नहीं कर सकता। हे जनार्दन! त्रिभुवन के राज्य तक के लिए मैं इन स्वजनों से युद्ध नहीं करना चाहता, फिर पृथ्वी के लिए तो कहना ही क्या है।।३२-३५।।

तात्पर्य

अर्जुन ने भगवान् श्रीकृष्ण को **गोविन्द** कहा है, क्योंकि वे गायों तथा इन्द्रियों को समग्र रसानन्द का आस्वादन कराते हैं। इस शब्द के प्रयोग से अर्जुन ने यह संकेत किया है कि उसकी इन्द्रियाँ किस प्रकार तृप्त हो सकती हैं। श्रीगोविन्द का कार्य हमारी इन्द्रियों को तृप्त करना नहीं है, किन्तु यदि हम उनकी इन्द्रियों को तृप्त करने का प्रयत्न करें तो हमारी इन्द्रियाँ अपने-आप तृप्त हो जायेंगी। विषयभोग के द्वारा अपनी इन्द्रियों को तृप्त करने की इच्छा से प्रेरित हुआ जीव साधारणतया भगवान् तक